REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

समकालीन कवियों में मंगलेश डबराल का स्थान 'नये युग में शत्रु' काव्य–संग्रह का संदर्भ

डॉ. सुनील
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

"इस खिड़की के बाहर
मेरा इंतजार हो रहा है
रात के स्याह पानी से उभरते
घरों की खिड़कियाँ खुल रही हैं।
आँखों की तरह
मुझे यह खिड़की खोलनी चाहिए
जो तमाम खिड़कियों के
खुलने की शुरुआत है।" – मंगलेश डबराल
(उद्धृत, कल्पना दुबे, समकालीन हिन्दी कविता में विचार तत्व, दिल्ली : हिमाचल बुक्स, 2009, पृ. 185)

समकालीन कविता की अपनी स्पष्ट परम्परा है। इसकी निरन्तरता प्रसाद और निराला से लेकर नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, धूमिल, जगूड़ी, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, रामदरश मिश्र, अरुण कमल, राजेश जोशी, उदय प्रकाश, ज्ञानेन्द्रपति, आलोक धन्वा, मंगलेश डबराल, इब्बार रब्बी, देवीप्रसाद मिश्र, वीरेन्द्र डंगवाल, ऋतुराज, कुमार अंबुज, मण्डलोई, बोधिसत्व, एकान्त श्रीवास्तव, बद्रीनारायण और असद जैदी तक बनी हुई है। जीवन की सार्थक प्रतिज्ञाओं से गहरी निकटता इसका संकल्प है। इस प्रकार समकालीन कविता यथार्थ को उद्घाटित करती है। सामाजिक चिन्ता के प्रति चैतन्य है। समकालीन कविता में संदर्भ में 'समकालीनता' अपने समय को उसके पूरे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने वाली सजग दृष्टि है। 'मार्क्सवाद' इसकी शक्ति है। समकालीनता का अनिवार्य सम्बन्ध अपने समय के विविध दार्शनिक, राजनैतिक और साहित्यिक विचारों से रहा है, यानी डार्विन, फ्रायड, मार्क्स और गांधी के साथ–साथ यथार्थवाद के विविध रूपों से भी और साहित्य के विविध रूपों की रचना करने वाली चिन्ताओं से भी। कविता का भी इससे घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। मार्क्सवादी चिंतन ने समकालीन कवियों को अधिक प्रभावित किया है। समकालीन कवियों ने अपने कथ्य को ज्यादा तेज और विश्वसनीय बनाने के लिए यथार्थ को कथ्य बनाया है। सभी समकालीन कवियों ने जीवन यथार्थ को उसकी समग्रता में चित्रित किया जिससे जीवन का अधिक प्रामाणिक रूप सामने आया। कवियों की पकड़ जीवन के सभी पक्षों पर थी। इनका आग्रह सामान्य व्यक्ति के जीवन का उद्घाटन था। अतः इन्होंने जीवन के विविध क्षेत्रों पर दृष्टि डाली, जैसे– आर्थिक समस्याएं, राजनैतिक, सामाजिक व्यवस्था के प्रति असंतोष, पूँजीवादी व्यवस्था की विकृति, रूढ़ियों पर प्रहार, महानगरीय जीवन की समस्याएं

आदि। सभी समकालीन कवियों में अपने समय के प्रति सचेत बोध दिखाई देता है। मंगलेश डबराल का समकालीन कवियों में महत्वपूर्ण स्थान है।

मंगलेश डबराल का जन्म 16 मई, 1948 को उत्तराखंड में टिहरी ज़िले के गांव काफलपानी में हुआ। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लंबे समय तक काम करने के बाद वे तीन वर्ष तक नेशनल बुक ट्रस्ट के सलाहकार रहे। उनके पांच कविता–संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन', 'घर का रास्ता', 'हम जो देखते हैं', 'आवाज़ भी एक जगह है', 'नये युग में शत्रु', तीन गद्य–संग्रह 'एक बार आयोवा', लेखक की रोटी', 'कवि का अकेलापन' और साक्षात्कारों का एक संकलन प्रकाशित हैं। उन्होंने बेर्टोल्ट ब्रेश्ट, हांस माग्नुस ऐंत्सेंसबर्गर, यानिस रित्सोस, ज़िबग्नीयेव हेर्बेत, तादेऊष रूज़ेविच, पाब्लो नेरूदा, एर्नेस्तो कार्देनाल, डोरा गाबे आदि की कविताओं का अंग्रेज़ी से अनुवाद किया है। वे बांग्ला कवि नबारुण भट्टाचार्य के संग्रह 'यह मृत्यु उपत्यका नहीं है मेरा देश' के सह–अनुवादक भी हैं। उन्होंने नागार्जुन, निर्मल वर्मा, महाश्वेता देवी, उ र अनंतमूर्ति, गुरदयाल सिंह, कुर्रतुल–ऐन हैदर जैसे कृती साहित्यकारों पर वृत्तचित्रों के लिए पटकथा लेखन किया है। वे समाज, संगीत, सिनेमा और कला पर समीक्षात्मक लेखन भी करते रहे हैं।

प्रायः सभी भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, डच, फ्रांसीसी, स्पानी, इतालवी, पुर्तगाली, बल्गारी, पोल्स्की आदि विदेशी भाषाओं के कई संकलनों और पत्र–पत्रिकाओं में मंगलेश डबराल की कविताओं के अनुवाद प्रकाशित हैं। मरिओला ओफ्रेदी द्वारा उनके कविता–संग्रह 'आवाज़ भी एक जगह है' का इतालवी अनुवाद 'अंके ला वोचे ऐ उन लुओगो' नाम से प्रकाशित हुआ और अंग्रेज़ी अनुवादों का एक चयन 'दिस नंबर इदज़ नॉट एग्ज़िट' भी शीघ्र प्रकाश्य है। उन्हें ओम् प्रकाश स्मृति सम्मान, शमशेर सम्मान, पहल सम्मान, साहित्य अकादेमी पुरस्कार, हिन्दी अकादेमी दिल्ली का साहित्यकार सम्मान और कुमार विकल स्मृति सम्मान आदि प्राप्त हुए हैं। उन्होंने आयोवा विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय लेखन कार्यक्रम, जर्मनी के लाइपज़िग पुस्तक मेले, रोतरदम के अंतरराष्ट्रीय कविता उत्सव में और नेपाल, मॉरिशस और मॉस्को की यात्राओं के दौरान कई जगह कविता पाठ किये हैं। जन संस्कृति मंच से जुड़े हुए मंगलेश डबराल आजीविका के लिए पत्रकारिता करते हैं। (फ्लैप से)

'नये युग में शत्रु' समकालीन कविता के प्रतिबद्ध कवि मंगलेश डबराल का नवीनतम प्रकाशित काव्य–संग्रह है जिसका प्रकाशन सन् 2013 में राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली से हुआ है। इस संकलन में कुल 63 कविताएं संकलित हैं।

काव्य–संकलन की कविताओं की विषय–वस्तु, पृष्ठभूमि व उनके महत्व को रेखांकित करते हुए प्रसिद्ध कवि असद जैदी लिखते हैं– ''एक बेगाने और असंतुलित दौर में मंगलेश डबराल अपनी नयी कविताओं के साथ प्रस्तुत हैं– अपने शत्रु को साथ लिये। बारह साल के अंतराल से आये इस संग्रह का शीर्षक चार ही लफ़्ज़ों में सब कुछ बता देता है : उनकी कला–दृष्टि, उनका राजनीतिक पता–ठिकाना, उनके अंतःकरण का आयतन। यह इस समय हिंदी की सर्वाधिक समकालीन और विश्वसनीय कविता है। भारतीय समाज में पिछले दो–ढाई दशक के फ़ासिस्ट उभार, सांप्रदायिक राजनीति और पूंजी के नृशंस आक्रमण से जर्जर हो चुके लोकतंत्र के अहवाल यहां मौजूद हैं और इसके बरक्स एक सौंदर्य–चेतस् कलाकार की उधेड़बुन का पारदर्शी आकलन भी। ये इक्कीसवीं सदी से आंख मिलाती हुई वे कविताएं हैं जिन्होंने बीसवीं सदी को देखा है। ये नये में मुखरित नये को भी परखती हैं और उसमें बदस्तूर जारी पुरातन को भी जानती हैं। हिंदी कविता में वर्तमान सदी की शुरुआत ही 'गुजरात के मृतक का बयान' से होती है....'' (फ्लैप से)

कवि मंगलेश डबराल का नया संग्रह 'नये युग मे शत्रु' ऐसे समय में आया है, जब विचार पर हमले तेज हुए हैं और प्रतिबद्धता को संदेह से देखा जाने लगा है। लेकिन मंगलेश अपनी पक्षधरता के साथ अपनी जमीन पर पहले से कहीं ज्यादा मजबूती के साथ डटे हुए दिखाई देते हैं। यह जमीन उस राजनीतिक कविता की है, जो अकविताई शोहदेपन को चुनौती देते हुए खडी हुई और जिसने हिंदी की व्यापक प्रगतिशील काव्यधारा से अपना रिश्ता नए सिरे से जोड़ा। इसने मार्क्सवाद से ऊर्जा ग्रहण की लेकिन वामपंथी विचार से अलग राह चलने वाले रघुवीर सहाय जैसे जनपक्षधर कवियों ने भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया। दरअसल नक्सलबाडी आंदोलन, गैर कांग्रेसवाद के उभार और अलग–अलग सवालों पर चलने वाले विभिन्न जनांदोलनों ने इसका आधार तैयार किया और पिछले चार दशकों में यही कविता हिंदी की मुख्यधारा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। लेकिन यह संग्रह इस बात का भी संकेत करता है कि यह धारा एक नए मोड़ की तलाश में है। यह एक ऐसे पड़ाव पर पहुँच गई है, जहां उसे नई चुनौतियों के बरक्स नई सिरे से तैयारियां करनी होगी। अपने लिए नए औजार

तलाशने होंगे। मंगलेश डबराल ने यह तैयारी शुरू कर दी है। इस संग्रह में उनकी काव्यभाषा काफी कुछ बदली हुई है।...इस संग्रह के नाम से ही पहला सवाल कोंधता हैः आखिर हमारा शत्रु कौन है? वह है– अंतरराष्ट्रीय वित्तीय पूंजीवाद। वह भूमंडलीकरण की महा परियोजनाओं के साथ हमारे देश में आया है और उसने हमारी राजनीति और समाज को अपने चंगुल में ले लिया है।

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय पूंजीवाद जनतंत्र की खाल ओढ़े और सूचना प्रोद्यौगिकी के संयंत्रों से लैस होकर आया है। उसके कारिंदे कहां किस रूप में अपना काम कर रहे हैं, हम ठीक–ठीक नहीं जान पाते। हमें अहसास कराया जा रहा है कि यह सब हमारे लिए ही हो रहा है, लेकिन दरअसल हमें बेड़ियों में जकड़ दिया जा रहा है।(पहल 96, जून 2014) इस शत्रु के बारे में कवि कहता है–

''वह अपने को कंप्यूटरों टेलीविजनों मोबाइलों
आइपैडों की जटिल आंतों के भीतर फैला देता है
अचानक किसी महंगी गाड़ी के भीतर उसकी छाया नज़र आती है
लेकिन वहां पहुंचने पर दिखाता है वह वहां नहीं है
बल्कि किसी नयी और ज्यादा महंगी गाड़ी में बैठकर चल दिया है।''
(पृ. 14)

दरअसल हमारा शत्रु कोई व्यक्ति नहीं, एक विचार है, एक दर्शन है जो अनेक रूपों में हमारे सामने आता है और हमारा शुभचिंतक बनने का ढोंग कर हमें ही इस्तेमाल कर चला जाता है। कवि के शब्दों में–

''हमें ललकारता नहीं
हालांकि उसके आने–जाने की आहट हमेशा बनी हुई रहती है
कभी–कभी उसका संदेश आता है कि अब कहीं शत्रु नहीं हैं
हम सब एक–दूसरे के मित्र हैं।'' (पृ. 15)

जीवन की उलझनों व बुनियादों सवालों पर प्रकाश डालते हुए कवि कहता है–

''अजीबोग़रीब है जीवन का हाल
वह अब भी भटकता है और जगह–जगह दस्तक देता है
मांगता रहता है अपने लिए
कभी जन्म कभी पैसे कभी हुनर कभी उधार
कभी बेचैनी कभी प्रेम।'' (पृ. 11)

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्वव्यापी चिंता बन चुका है। दिनों–दिन बढ़ रही ग्लोबल वार्मिंग एक भयावह संकट बनता जा रहा है। प्रदूषण के बढ़ते हुए दुष्प्रभाव का कवि ने 'घटती हुई आक्सीजन' कविता में बखूबी अंकन किया है–

''अस्पतालों में दिखाई देते हैं ऑक्सीजन से भरे हुए सिलिंडर
नीमहोशी में डूबते–उतराते मरीज़ों के मुंह पर लगे हुए मास्क
और उनके पानी में बुलबुले बनाती हुई थोड़ी–सी प्राणवायु
ऐसी जगहों की तादाद बढ़ रही है
जहां सांस लेना मेहनत का काम लगता है।'' (पृ. 12)

बाजारीकरण, भूमण्डलीकरण व उतर आधुनिकता के सामान्य जन पर पड़ रहे प्रभाव का चित्रण भी कवि ने किया है। यह ऐसा दौर है जहां आम आदमी को लूटने की नीतियां, कूटनीतियां और षड्यंत्र रचे जाते हैं–

''हमारे शत्रु के पास बहुत से फ़ोन नंबर हैं ढेरों मोबाइल

वह लोगों को सूचना देता है आप जीत गये हैं
एक विशाल प्रतियोगिता में आपका नाम निकल आया है
आप बहुत सारा क़र्ज़ ले सकते हैं बहुत–सा सामान ख़रीद सकते हैं
एक अकल्पनीय उपहार आपका इंतज़ार कर रहा है
लेकिन पलट कर फोन करने पर कुछ नहीं सुनाई देता।'' (पृ. 15)

'आदिवासी' कविता में आदिवासियों के शोषण और उन्हें विस्थापित किये जाने की पीड़ा को कवि ने अभिव्यक्ति प्रदान की है। डिवेलपमेंट के नारे के नाम पर बड़ी–बड़ी परियोजनाएं बन रही हैं और जिनके लिए आदिवासियों और गरीब किसानों को उनकी जमीन, जंगल और पहाड़ों से बेदखल किया जा रहा है। कहीं–कहीं तो सीधे पुलिस और गुंडों की मिलीभगत से उन्हें उनकी जमीन से हटा दिया जाता है। हालांकि कई जगहों पर आदिवासियों को लोलीपोप भी थमाये गए हैं। देश भर में विस्थापितों की एक फौज तैयार हो गई है। लेकिन यह न तो मीडिया की चर्चा का विषय है न ही मध्यवर्ग का। मंगलेश लिखते हैं–

''यह साफ है कि उससे कुछ छीन लिया गया है
उसे अपने अरण्य से दूर ले जाया जा रहा है
उसके लोहे कोयले और अभ्रक से दूर
घास की ढलानों से तपती हुई चट्टानों की ओर
सात सौ साल पुराने हरसूद से एक नए और बियाबान हरसूद की ओर
पान से भरी हुई टिहरी से नयी टिहरी की ओर जहां पानी खत्म हो गया है।'' (पृ. 16)

बड़े प्रोजेक्टों के कारण लाखों लोग विस्थापित हुए हैं। टिहरी जैसा पूरा शहर ही नष्ट हो गया है। विस्थापितों से न जाने कितने वायदे किए गए पर वे आज तक पूरे नहीं हुए। एक बार जो उजड़े वे फिर कभी बस न पाए। इसलिए आज विकास की इस प्रक्रिया पर सवाल उठाए जा रहे हैं। देश के अलग–अलग हिस्सों में आम जनता संगठित–असंगठित रूप से इसका विरोध कर रही है। लेकिन विकासवादियों के शोर–शराबे में वह आवाज़ दब सी गई लगती है। कवि उन लोगों की आवाज़ में आवाज़ मिलाकर कहता है–

''उसने किसी तरह एक बांसुरी और एक तुरही बचा जी है
एक फूल एक मांदर एक धनुष बचा लिया है,
अखबारी रिपोर्टें बतलाती हैं कि जो लोग उस पर शासन करते हैं
देश के 636 में से 230 ज़िलों में
उनका उससे मनुष्यों जैसा कोई सरोकार नहीं रह गया है
उन्हें सिर्फ उसके पैरों तले की ज़मीन में दबी हुई
सोने की एक नयी चिड़िया दिखाई देती है।'' (पृ. 17)

यह साफ नज़र आता है कि कविता लिखते हुए मंगलेश अपने सर्वोत्तम रूप में होते हैं– और यही चीज़ उनकी कविता को बड़ा बनाती है। नितांत संवेदनशील मगर उतनी ही चौकस उनकी कविता अपनी पारदर्शी निगाह से यथार्थ को जैसे तार–तार कर देती है–

''मैं जब भी यथार्थ का पीछा करता हूं
देखता हूं वह भी मेरा पीछा कर रहा हैं, मुझसे तेज़ भाग रहा है
घर हो या बाज़ार हर जगह उसके दांत चमकते हुए दिखते हैं
अंधेरे में रोशनी में
घबराया हुआ मैं नीद में आता हूं तो वह वहां मौजूद होता है
एक स्वप्न से निकल कर बाहर आता हूं
तो वहां भी वह पहले से घात लगाए हुए रहता है

.... यथार्थ इन दिनों बहुत ज्यादा यथार्थ है
उसके शरीर से ज्यादा दिखाई दे रहा है उसका रक्त।'' (पृ. 20–21)

साम्राजवादी ताकतों की पोल खोलते हुए कवि कहता है–

''एक आदिवासी को उसके जंगल से खदेड़ने का ख़ाका बन चुका है
विस्थापितों की एक भीड़
अपनी बचीखुची गृहस्थी को पोटलियों में बांध रही है
उसे किसी अज्ञात भविष्य की ओर ढकेलने की योजना तैयार है

ऊपर आसमान में एक विकराल हवाई जहाज़ बम बरसाने के लिए तैयार है

नीचे घाटी में एक आत्मघाती दस्ता
अपने सुंदर नौजवान शरीरों पर बम और मिसाइलें बांधे हुए है।'' (पृ. 21)

कवि नये बैंक को पूंजीवाद का प्रतीक मानता है–

''वह अपने आसपास ठेलों पर सस्ती चीजें बेचने वालों को भगा देता है
और वहां कारों के लिए कर्ज देने वाली गुमटियां खोल देता है।'' (पृ. 22)

हमारे देश की राजनीति ने देश की दुर्गति कर दी है। वर्तमान राजनीति व राजनेताओं पर करारा व्यंग्य 'हमारे शासक' कविता में देखने को मिलता है–

''हमारे शासक गरीबों के बारे में चुप रहते हैं
शोषण के बारे में कुछ नहीं बोलते
अन्याय को देखते ही वे मुंह फेर लेते हैं
हमारे शासक खुश होते हैं जब कोई उनकी पीठ पर हाथ रखता है
वे नाराज़ हो जाते हैं जब कोई उनके पैरों में गिर पड़ता है
दुर्बल प्रजा उन्हें अच्छी नहीं लगती
हमारे शासक गरीबों के बारे में कहते हैं कि वे हमारी समस्या है
समस्या दूर करने के लिए हमारे शासक
अमीरों को गले लगाते रहते हैं।'' (पृ. 24)

आखिर क्या कारण है कि मंत्रियों और सांसदों की निजी संपति रातों रात बढ़ती चली जा रही है? राजनीति और अफसरशाही का गठजोड़ देश को बरबाद कर रहा है। दिनों दिन भ्रष्टाचार कैंसर के मर्ज की तरह बढ़ता जा रहा है। आज के नेता जनता के वोट लेने के लिए तरह–तरह के पाखंड करते हैं। इस बारे में कवि ने लिखा है–

''हमारे शासक अक्सर जहाजों पर चढ़ते और उनसे उतरते हैं
हमारे शासक पगड़ी पहने रहते हैं
अकसर कोट कभी–कभी टाई कभी लुंगी
अकसर कुर्ता–पाजामा कभी वरमूडा टीशर्ट अलग–अलग मौकों पर
हमारे शासक अकसर कहते हैं हमें अपने देश पर गर्व है।'' (पृ. 24)

अमेरिका व चीन जैसे राष्ट्र भारत को एक बड़े बाज़ार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। आज विदेशी वस्तुओं की पहुंच घर–घर तक हो चुकी है। विदेशी वस्तुओं के अधिकाधिक प्रयोग को दिखावा व मानसिक गुलामी का प्रतीक मानते हुए कवि कहता है–

''ज़्यादातर चीज़ें उलट–पुलट हो गयी हैं
इन दिनों दिमाग पर पहले क़ब्ज़ा कर लिया जाता है
ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करने के लिए लोग बाद में उतरते हैं
इस तरह नयी गुलामियां शुरू होती हैं
तरह–तरह की सस्ती और महंगी चमकदार रंग–बिरंगी
कई बार वे खाने–पीने की चीज़ों से ही शुरू हो जाती हैं
और हम सिर्फ एक स्वाद के बारे में बात करते रह जाते हैं
कोई चलते–चलते हाथ में एक आश्वासन थमा जाता है
जिस पर लिखा होता है 'मेड इन अमेरिका'।'' (पृ. 26)

बाजार ने सामाजिक मूल्यों पर गहरा हमला किया है। जिसके पास सपन्नता है, वह सफल माना जाता है। आज मीडिया सिर्फ संपन्नता या खुशहाली को दिखाता है। वह अभाव, हताश या पिछड़ापन नहीं दिखाता। आदमी और आदमी के बीच की दूरी बढ़ी है। कोई किसी से अपने मन की बात नहीं कहता। हर कोई दिखावा करता है। कवि के शब्दों में–

''लोग हर वक्त घिरे रहते हैं लोगों से
अपनी सफलताओं से अपनी ताकत से पैसे से अपने सुरक्षाबलों से
कुछ पूछने पर तुरंत हंसते हैं
जिसे इन दिनों के आम चलन में प्रसन्नता माना जाता है।'' (पृ. 26)

'हत्यारों से कहा जाना चाहिए कि एक भी मनुष्य का मरना पूरी मनुष्यता की मृत्यु है' (पृ. 29) कहने वाला कवि हिंसक हथियारों की होड़ का विरोध करते हुए इसे मनुष्यता के लिए बड़ा खतरा मानता है। कवि समाज में बढ़ रही हिंसा, रक्तपात व हत्या जैसे अपराधों से व्यथित है। 'ताकत की दुनिया' कविता में कवि 'संतोष परम सुखम्' की भारतीय अवधारणा पर चलने का मानवतावादी संदेश दुनिया की साम्राज्यवादी शक्तियों को देता है।

कवि महसूस करता है कि चुनौतियां बेहद कठिन है। कवि संघर्ष की शुरुआत करने का हिमायती है। मंगलेश के शब्दों में–

''ताकत की दुनिया में जाकर मैं क्या करूंगा
मैं सैकड़ों हजारों जूते चप्पल लेकर क्या करूंगा
मेरे लिए एक जोड़ी जूते ठीक से रखना कठिन है।'' (पृ. 36)

व्यक्ति की बेचैनी को प्रकट करते चलते कवि पर मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' और 'दिमागी गुहान्धकार का औरांट उटांग' कविता का प्रभाव भी दिखाई देता है–

''सोने से पहले मैं तमाम भयानक दृश्यो को बाहर खदेड़ता हूं
और खिड़कियां बंद कर देता हूं
सिगरेट बुझाता हूं चप्पलें पलंग के नीचे खिसका देता हूं
सोने से पहले मैं एक गिलास पानी पीता हूं
और कहता हूं पानी तुम बचे रहना
एक गहरी सांस लेता हूं

और कहता हूं हवा तुम यहां रहो
मेरे फेफड़ों और दीवारों के बीच
सोने से पहले मैं कहता हूं
नींद मुझे दो एक ठीक–ठाक स्वप्न।'' (पृ. 38)

तेजी से बदल रहे सामाजिक परिदृश्य का एक चित्र देखिए–

''इन दिनों लोगों को परवाह नहीं उनके साथ क्या हो रहा है
कोई अन्याय को महसूस नहीं करता
लोग अत्याचार को धूल की तरह झाड़ देते हैं सहसा चिल्ला उठते हैं नहीं
नहीं
कहीं तुरंत से कोई खुशी खोजकर ले आते हैं
उसे जमा कर लेते हैं अपने आप जैसे वह सिर्फ उनके लिए बनी हो
बहुत सारे कपड़े और जूते पहने लेते हैं बहुत सारा खाना खा लेते हैं
एक महंगा मोबाइल निकालते हैं अपने अश्लील संदेशों के साथ
दंगों में मारें गए लोगों के घरों से उठाकर ले जाते हैं
एक टेलीविजन ताकि जारी रह सके मनोरंजन।'' (पृ. 41)

नए बाजार में प्रबंधन को सबसे अहम माना गया है और यह अवधारणा प्रस्तुत की है कि मैनेजमेंट के जरिए कुछ भी संभव है। यह माना जाता है कि कुशल प्रबंधन से किसी भी उत्पाद को बेचा जा सकता है। कवि ने इस पर कटाक्ष करते हुए लिखा है:

''अन्याय का पता न चलने देना अन्याय का कुशल प्रबंधन है
लूट का न दिखना लूट की कला है
दुनिया में कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं है
बल्कि सब कुछ अत्यंत प्रबंधनीय है।'' (पृ. 44)

'गुजरात के मृतक का बयान' हाल के वर्षों की हिंदी की कुछ श्रेष्ठ कविताओं में से एक है। शासक वर्ग के इस खेल में मुख्य रूप से गरीब आदमी ही पिसता है। उसे न जाने कितने तरीकों से मारा जाता है। कविता की यह पंक्तियां देखिए–

''और मुझे इस तरह मारा गया
जैसे एक साथ बहुत से दूसरे लोग मारे जा रहे हों
मेरे जीवित होने का कोई बड़ा मकसद नहीं था
लेकिन मुझे मारना बड़ा मकसद हो।'' (पृ. 52–53)

शहरी दुनिया के यथार्थ का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है–

''आधा शहर नाक पर रूमाल रखकर पार करना पड़ता है
आधा शहर कम से कम कपड़ों में आपका स्वागत करता है
आधा शहर त्वचा और देह है आधा रेत और राख है
आधा शहर रात में दिन है आधा शहर दिन में रात है।'' (पृ. 63)

'कालगर्ल' कविता में समाज के क्रूर, घृणित वीभत्स रूप को उजागर किया गया है जो कालगर्ल बनने की स्थितियां–परिस्थितियां उत्पन्न करता है। 'पैसा' कविता में अधिकाधिक धन कमाने के रास्ते पर होने वाले

अन्याय का चित्रण देखने को मिलता है। सभी रिश्ते–नाते, संवेदनाएं पैसे की तथाकथित महत्वाकांक्षा के कारण खत्म हो रही हैं।

दरअसल कविता में यह उजली और मार्मिक मनुष्यता ही यह चीज़ है जो मंगलेश डबराल को अपने समकालीनों के बीच अलग और विशिष्ट बनाती है। समकालीन हिंदी कविता में कई आवाज़े मंगलेश डबराल से मिलती–जुलती हैं, उन सबकी अपनी–अपनी खूबियां और खासियतें भी हैं, लेकिन मंगलेश की कविता में एक सूक्ष्म संवेदना लगातार प्रवाहमान रहती है। उनके यहां विषयों की बहुतायत है–

''प्यार में तुम किसी करिश्मे का इंतज़ार करते रहे
सितमगरों का साथ नहीं दिया
पैसे की खातिर बदले नहीं
कभी ताकत की दहलीज तक गए तो अपने को बददुआ दी
आदमखोरों को भी तुम हैरत से देखा किये
सोचा किये कि आखिर हमीं से कुछ हुआ है कि वे इस तरह हो गए
अक्सर अपने भीतर झांका किए कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं
तुम्हारा अदना जमीर कहता रहा गलत गलत सही सही।'' (पृ. 87)

कितने हैं हमारे समय में ऐसे कवि, जो अपनी कविता में यथार्थ की इतनी गहरी पड़ताल के साथ मनुष्यता का यह पाठ संभव कर रहे हैं? मंगलेश डबराल की कविता समकालीन सच को उजागर करने की क्षमता से पूर्ण है। उनकी कविता का फलक अत्यंत विस्तृत और बहुआयामी है। सचमुच, मंगलेश डबराल भविष्य की चिन्ता से जुड़े हुए कवि हैं।

डॉ. सुनील
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।